साबू दस्तगीर

कैलाश नारद

उस रोज़ महल में जैसे कोहराम मचा हुआ था। न जाने कैसे एक विकराल अजगर बगीचे में आ गया था। और अब एक हिरन को अपनी गेंडुली में लपेट रहा था। अजगर की चपेट से छुटकारा पाने के लिए हिरन बुरी तरह से चिल्ला रहा था। अजगर की पकड़ सख्त होती जा रही थी। महल में काम करने वालों की भीड़ वहाँ लग गई थी। वे सब घबराए हुए थे। किसी को भी सूझ नहीं रहा था कि हिरण को कैसे बचाया जाए।

तभी, बगीचे में एक हाथी की आवाज़ सुनाई दी। वह चिघाड़ता हुआ उस असहाय हिरन की तरफ तेज़ी से बढ़ता चला जा रहा था। उस पर एक किशोर बैठा हुआ था, जो हुम.. हुम.. की आवाज़ करते हुए उस हाथी को आगे की तरफ धकिया रहा था।

अजगर की गेंडुली में फँसे हिरन की चीखें तेज़ हो गई थीं। वह छूटने के लिए छटपटा रहा था। तभी, हाथी अजगर के करीब पहुँच गया। उसकी आहट पाकर अजगर ने फुँफकार ली। इससे पहले कि वह हाथी को चोट पहुँचा पाता उस पर सवार किशोर ने अपने हाथ का बल्लम अजगर की गेंडुली में घुसेड़ दिया। अजगर की पकड़ ढीली पड़ गई। डरा हुआ हिरन अभी तक चीख रहा था, लेकिन उसकी जान बच गई थी।

हाथी पर बैठे किशोर को देखे लोग खुशी से चिल्ला रहे थे, "साबू.. साबू...!"

हॉलीवुड के प्रसिद्ध फिल्म निर्माता जेम्स फ्लाहेर्ती उन दिनों मैसूर के महाराजा के मेहमान थे। अपने कमरे की खिड़की से वे भी साबू के शौर्य को देख रहे थे। वे रुडयार्ड किपलिंग की कहानियों पर फिल्में बना रहे थे। जबलपुर के पास सिवनी के जंगलों में विलियम स्लीमैन के सिपाहियों ने भेड़ियों की माँद में पलने वाले एक लड़के को पकड़ा था। इस पर रुडयार्ड किपलिंग ने *द जंगल बुक* नामक पुस्तक लिखी थी। इस भेड़िया बालक का नाम रखा था, मोगली। *नेशनल ज्योग्रफिक* पत्रिका के प्रकाशक चाहते थे कि मोगली पर फिल्म बनाई जाए।

साबू को देखकर जेम्स फ्लाहेर्ती को लगा कि उनकी खोज पूरी हो गई है। उन्होंने महाराजा जय चामराजा वाडियार से साबू के बारे में पूछताछ की।

साबू का पूरा नाम साबू सैम दस्तगीर था। उसका जन्म 27 जनवरी 1924 को हुआ था। वह महाराजा के महावत पिसेन सैम दस्तगीर का बेटा था। पिता की मौत के बाद नौ साल की उमर में ही उसने गजशाला का काम सँभाल लिया था।

फ्लाहेर्ती उस महावत बालक को अपने साथ अमरीका ले गए। वहाँ उसको लेकर उन्होंने *द एलीफेंट बॉय* नामक एक फिल्म बनाई। उस फिल्म में साबू के अभिनय की खूब तारीफ हुई। साबू ने जल्दी ही अँग्रेज़ी सीख ली। फिर जब फ्लाहेर्ती ने *जंगल बुक* में मोगली के रूप में साबू को उतारा तो पूरे युरोप में साबू दस्तगीर के नाम की ऐसी धूम मची कि छोटे-छोटे बच्चों तक ने मोगली

को देखने हॉलीवुड की यात्राएँ कीं। अमरीका की पत्र-पत्रिकाओं ने उस पर लेख लिखे। *द एलीफेंट बॉय* को वेनिस फिल्म महोत्सव में अमरीका की तरफ से भेजा गया। उसे सर्वश्रेष्ठ फिल्म का पुरस्कार मिला। साबू इंग्लैण्ड के बच्चों का सबसे चहेता नायक बन गया था। जेम्स फ्लाहेर्ती बहुत खुश थे।

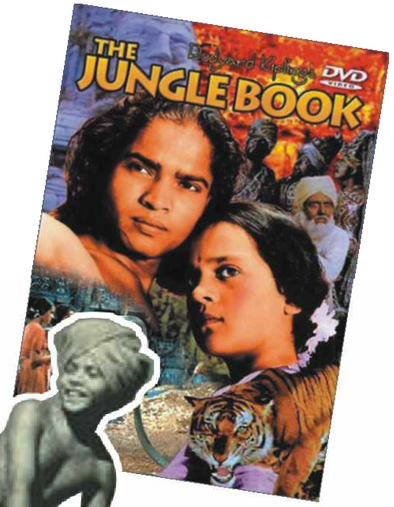

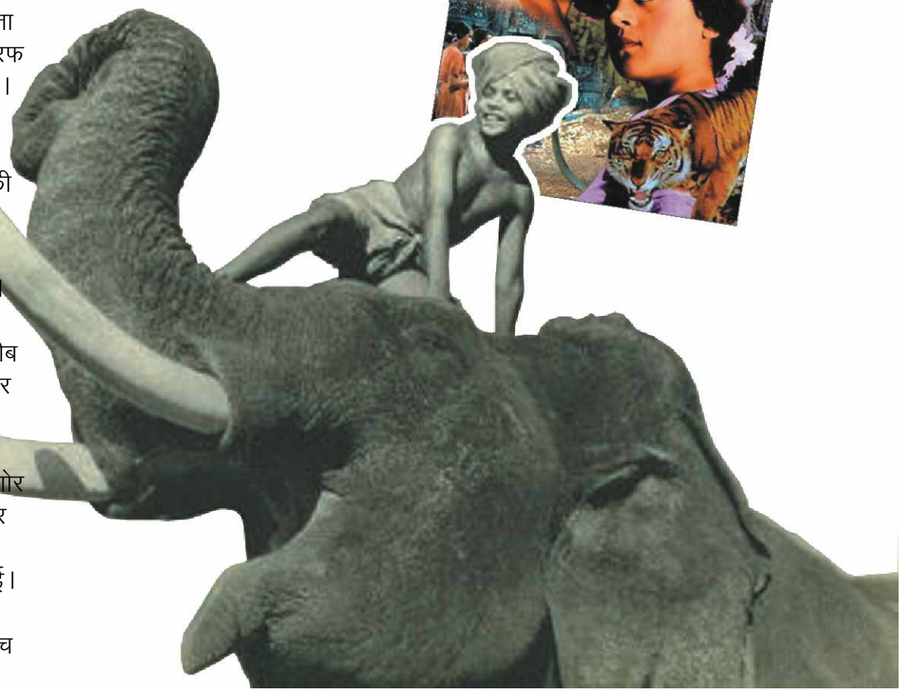

तभी विश्वयुद्ध छिड़ गया। साबू दस्तगीर ने अमरीका की फौज को भी अपनी सेवाएँ दीं। सैनिकों की मदद के लिए उसने लाखों डॉलर इकट्ठा किए। उनके वास्ते डाक की टिकटें बेचीं। लेकिन तब भी उसने अभिनय करना नहीं छोड़ा। साबू की हॉलीवुड में बनी आखिरी फिल्म *द ब्लैक लार्सिसस* थी। इसमें उसने एक भारतीय राजकुमार की भूमिका निभाई थी। लेकिन दर्शकों ने उस फिल्म को अस्वीकार कर दिया। साबू दस्तगीर अब बड़ा हो चला था। लेकिन उसके हज़ारों-हज़ार प्रशंसक उसे बारह साल के मोगली और *एलीफेंट बॉय* की भूमिकाओं में ही देखना चाहते थे। वे यह ही नहीं थे कि साबू अब उन्नीस साल का वयस्क हो गया है। उसके प्रशंसक थे कि उसे *द थीफ ऑफ बगदाद* मानने को राज़ी ही नहीं थे। इस फिल्म में साबू ने एक चोर की भूमिका निभाई थी।

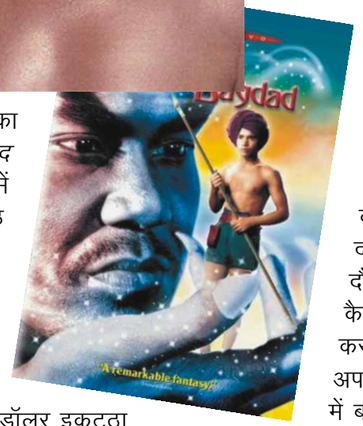

जब साबू को हॉलीवुड में काम मिलना बन्द हो गया। तो उसने इटली का रुख किया। वहाँ उसने *गुड मॉर्निंग एलीफेंट* और *इल तेसरो देल बेंगाल* यानी शेर-ए-बंगाल में काम किया मगर नतीजा शून्य ही रहा। मजबूर होकर उसे एक फर्नीचर बनाने वाले के यहाँ सेल्समैन की नौकरी करनी पड़ी। यहाँ आने-जाने वालों की वह कुर्सी-मेज़ खरीदने के लिए खुशामद करता था।

साबू की बदहाली का एक बहुत बड़ा कारण अमरीका में काले-गोरे का भेद भी था। इस तरह साबू दस्तगीर दोहरे संकटों से जूझा। जिस दौर में उसे खेलना चाहिए था, उसे कैमरे की तेज़ रोशनी के सामने खड़ा कर दिया गया। अब वह चाहकर भी अपने देश नहीं लौट सकता था। सिनेमा में बहुत ऊँचा उड़ने की उसकी तमन्ना थी, लेकिन उसकी गहरी साँवली रंगत ने मानो उसके पंख कतर दिए।

1963 में सिर्फ 39 साल की उमर में दिल का दौरा पड़ने से साबू की मौत हो गई। उसका बेटा पॉल साबू एक जाना-माना गीतकार है। और उसने साबू नाम का एक रॉक बैंड भी बनाया है। उसकी बेटी जैसमीन साबू घुड़सवारी की प्रशिक्षक हुई।

कॉमन ग्रास यैलो

(Eurema hecabe)

इस तितली को अकेशिया, लैंटाना और रतनजोत के फूलों पर उड़ते देखा जा सकता है। ज़मीन के काफी पास। इसके ऊपरी पीले पंख पर काफी चौड़ा काला बॉर्डर होता है। एशिया और अफ्रीका में इनकी बहुत सारी प्रजातियाँ देखी जा सकती हैं। अलग-अलग प्रजातियों को उनके पंखों पर बने पैटर्न से पहचाना जा सकता है।

पंखों का फैलावः 40-50 मिली मीटर